This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4408**

Unique Paper Code : **205439** **C**

Name of the Paper : **Hindi 'A' (M.I.L.)**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) & B.A.**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10+10=30

(क) अचल के शिखरों पर जा चढ़ी,
किरण पादप-शीश-विहारिणी ।
तरणि-बिंब तिरोहित हो चला,
गगन-मंडल मध्य शनैः शनैः ॥

(ख) गगन मंडल में रज छा गई,
दश-दिशा बहु-शब्द-मयी हुई ।
विशद-गोकुल के प्रति-गेह में,
बह चला वर-स्रोत विनोद का ॥

P.T.O.

(ग) यह कौन था ? इस मरते हुए शरीर पर इसने अमृत और विष दोनों एक साथ क्यों बरसाया ? अरे ! अभी तो यहाँ खड़ा गा रहा था, अभी कहाँ चला गया ? निस्संदेह यह कोई देवता था । नहीं तो इस कठिन पहरे में कौन आ सकता है ! ऐसा सुंदर रूप और ऐसा मधुर सुर और किसका हो सकता है ! क्या कहता था ? 'अब तजहु वीर वर भारत की सब आसा' ऐं ! यह देववाक्य क्या सचमुच सिद्ध होगा ? क्या अब भारत का स्वाधीनता-सूर्य फिर न उदय होगा ?

(घ) अगर यह विवाह-संस्था हट जाए तो कितना अच्छा हो । पुरुष और नारी में मित्रता हो । बौद्धिक मित्रता और दिल की हमदर्दी । यह नहीं कि आदमी औरत को वासना की प्यास बुझाने का प्याला समझे और औरत आदमी को अपना मालिक । असल में बँधने के बाद ही, पता नहीं क्यों सम्बन्धों में विकृति आ जाती है । मैं तो देखती हूँ कि प्रणय विवाह भी होते हैं तो वह असफल हो जाते हैं क्योंकि विवाह के पहले आदमी औरत को ऊँची निगाह से देखता है, हमदर्दी और प्यार की चीज़ समझता है और विवाह के बाद सिर्फ वासना की ।

(ङ) चलने को तो गाड़ी का बैल भी रास्ते पर चलता है ! लेकिन सैकड़ों मील चलने के बाद भी वह गाड़ी का बैल ही बना रहता है । क्या तुम गाड़ी के बैल बनना चाहते हो ? नहीं कपूर ! आदमी जिन्दगी का सफर तय करता है । राह की ठोकरें और मुसीबतें उसके व्यक्तित्व को पुख़्ता बनाती चलती हैं, उसकी आत्मा को परिपक्व बनाती चलती हैं । क्या तुममें परिपक्वता आई ? नहीं । मैं जानता हूँ, तुम अब मेरा भी निषेध करना चाहते हो । तुम मेरी आवाज़ को भी चुप करना चाहते हो।

2. 'नीलदेवी' की मूल संवेदना की पहचान कीजिए । 12

अथवा

'नीलदेवी' की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए ।

3. 'प्रियप्रवास' के प्रकृति-चित्रण का विवेचन कीजिए । 12

अथवा

'प्रियप्रवास' की भाषा-सम्बन्धी विशेषताएँ बताइए ।

4. 'गुनाहों का देवता' में प्रतिपादित प्रेम के स्वरूप पर प्रकाश डालिए । 12

अथवा

'गुनाहों का देवता' के चन्दर का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

5. (क) कल उन दुष्ट यवनों ने महाराज से कहा कि तुम जो मुसलमान हो जाओ तो हम तुमको अब भी छोड़ दें । इस समय वह दुष्ट अमीर भी वहीं खड़ा था । महाराज ने लोहे के पिंजड़े में से उसके मुँह पर थूक दिया—और क्रोध करके कहा कि दुष्ट ! हमको पिंजड़े में बंद और परवश जानकर ऐसी बात कहता है ! छत्री कहीं प्राण के भय से दीनता स्वीकार करते हैं ? तुझ पर थू और तेरे मत पर थू ।

—उपर्युक्त अवतरण के आधार पर 'नीलदेवी' की नाट्य-भाषा का विवेचन कीजिए । 9

P.T.O.

अथवा

(ख) आदमी हँसता है, दुख-दर्द सभी में आदमी हँसता है । जैसे हँसते-हँसते आदमी की प्रसन्नता थक जाती है और आदमी करवट बदलता है ताकि हँसी की छाँह में कुछ विश्राम कर फिर वह आँसुओं की कड़ी धूप में चल सके ।

उपर्युक्त अवतरण के आधार पर 'गुनाहों का देवता' की कथा-भाषा का वैशिष्ट्य बताइए।